१७. हमारे व्यक्तित्व का विकास

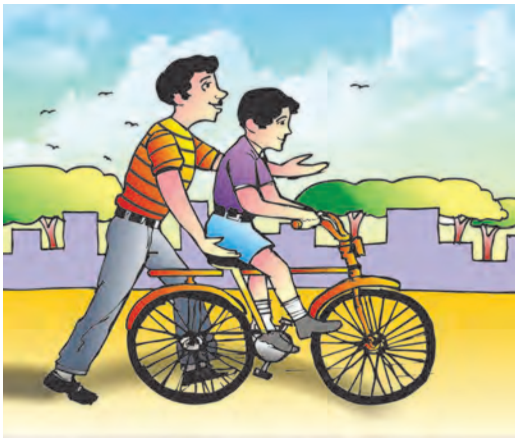
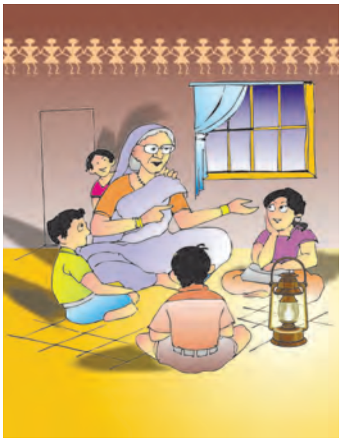

बताओ तो

- ऊपर दिए गए चित्रों में तुम्हें क्या दीखता है ?
- इन चित्रों के छोटे बच्चे अपने से बड़े व्यक्तियों से क्या सीख रहे हैं ?

छोटे से बड़े होते समय हम बहुत-सी छोटी-बड़ी बातें सीखते हैं । इससे हमारी आदतें बनती जाती हैं । हमारी पसंद-नापसंद निर्धारित होती जाती है । धीरे-धीरे हमारे विचार स्थायी और पक्के होने लगते हैं । इसे ही हम अपना 'व्यक्तित्व निर्माण' कहते हैं ।

तुमने अपने बचपन के छायाचित्र (फोटो) अवश्य देखे होंगे । तुम्हें घुटनों के बल चलना पड़ा होगा फिर तुमने चलना सीखा । कुछ समय बाद बोलना सीखा । दाँत कैसे स्वच्छ करें ? स्नान कैसे किया जाता है ? भोजन नीचे गिराए बिना कैसे ग्रहण किया जाए ? अपने से बड़े व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए ? ऐसी ही सीधी-सादी बातों से लेकर दूसरी अनगिनत बातें तुम सीखते हो। विद्‌यालय का बस्ता कैसे तैयार करें ? साइकिल कैसे चलाएँ ? मोबाइल पर खेल कैसे खेलें ? जानवरों को चारा कब देना है ? दुकान से सामान कैसे लाया जाए ? अपरिचित लोगों के साथ कैसा व्यवहार करें ? ऐसी बातों की एक लंबी सूची तुम बना सकते हो ।

ये सभी बातें तुमने कैसे सीखी हैं ? ये बातें तुम्हें किसने सिखाईं ?

अपने माता–पिता और सगे–संबंधियों से तुमने इनमें से बहुत–सी बातें सीखी होगी । हमारे माता–पिता हमारी अँगुलियाँ पकड़कर हमें चलना सिखाते हैं । बोलने तथा व्यवहार करने के ढंग भी बताते हैं । गलती होने पर उसे सुधारना भी सिखाते हैं । उनको यह लगता है कि हम एक अच्छे व्यक्ति बनें ।

क्या तुम जानते हो

सिंह का शावक शिकार (आखेट) करना कैसे सीखता है ?

सिंह के शावक को जन्म से ज्ञात नहीं होता कि शिकार करके उसे अपना पेट कैसे भरना है। उसकी माँ और झुंड की अन्य सिंहनियाँ ही उसे सिखाती हैं कि शिकार कैसे किया जाता है । दो सप्ताह का होने तक ये शावक अत्यंत सुकुमार होते हैं । ये अपनी आँखें भी नहीं खोल पाते। इसलिए उनकी माँ उन्हें सभी से छिपाकर रखती है । जब ये शावक आठ सप्ताह के हो जाते हैं तब झुंड के अन्य जानवरों से उनकी पहचान कराती है । तब झुंड की सभी सिंहनियाँ इनकी निगरानी करने लगती हैं और ध्यान देने लगती हैं । तीन माह का होने तक सभी उन्हें प्यार करती हैं । इसके बाद इनका शिकार करने का प्रशिक्षण प्रारंभ होता है । शिकार करने में पारंगत होने में उन्हें लगभग दो से तीन वर्ष का समय बिताना पड़ता है ।

जो हमें स्नेह करते हैं; उनकी निरंतर यही इच्छा तथा प्रयास रहता है कि हमारे अंदर अच्छी आदतों का निर्माण हो । हमारे दादा, दादी, चाचा, मामा, मौसी, बुआ जैसे समीपी सगे–संबंधियों की भी हमारे लिए आत्मीयता होती है । उनसे हम बहुत–सी बातें सीखते हैं । हमारे अपने लोग हमें सिखाते हैं कि अपना काम स्वयं कैसे करना चाहिए । जब हम ये सब कार्य अपने–आप तथा सुचारु ढंग से करने लगते हैं तब सब लोग लाड़–प्यार के साथ सराहना करते हैं । सब लोग यह भी कहने लगते हैं कि ‘अब तुम बड़े हो गए हो ।’

क्या तुम जानते हो

क्या तुमने हाली रघुनाथ बरफ और समीप अनिल पंडित ये नाम सुने हैं ? इनमें हाली ठाणे जिले की शहापुर तहसील की लड़की है । हाली ने अपनी बड़ी बहन को तो तेंदुए के चंगुल से छुड़ाया था । समीप ने तो गोठ में पगहे से बाँधी गई कई भैंसों को आग से छुटकारा दिलाया था। इसी कारण में जनवरी २०१३ में इन दोनों को प्रधानमंत्री के हाथों ‘राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार’ देकर गौरान्वित किया गया ।

बताओ तो

अपने माता–पिता से और अपने सगे–संबंधियों से तुम कौन–कौन–सी बातें सीखते हो ? उनकी एक सूची तैयार करो । ये सब बातें तुम कैसे सीखे हो ? इसपर विचार करो ।

क्या तुम जानते हो

बाबा आमटे ने अपना पूरा जीवन समाज सेवा में ही व्यतीत कर दिया । उनके जीवन का मुख्य उद्‌देश्य कुष्ठरोगियों तथा अंधे-अपंग लोगों को अपने पैरों पर खड़ा करना था । इस काम में उनकी पत्नी साधना बहन ने उनको अमूल्य योगदान दिया । उनके बेटों तथा बहुओं ने उनके इस कार्य को आगे शुरू रखा है । अब तो उनकी तीसरी पीढ़ी ने भी इस कार्य में अपना योगदान देना प्रारंभ किया है ।

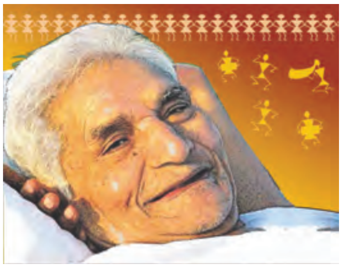
बाबा आमटे

माता-पिता जी, दादी-दादा जी, इन लोगों का अनुकरण करते हुए समाजसेवा का कार्य सतत चलाते रहने का यह अत्यंत प्रेरणादायी उदाहरण है न !

ऐसा मानना ठीक नहीं है कि हम प्रत्येक बात प्रशिक्षण द्‌वारा ही सीख सकते हैं । अपने आस-पास के लोगों को देखकर भी हम बहुत-सी बातें अपने-आप सीखते रहते हैं । हमारे साथी-सहेली कैसे बोलते हैं ? कौन-से खेल खेलते हैं ? अध्ययन कैसे करते हैं ? ऐसी बहुत-सी बातें हम अनजाने में ही सीख लेते हैं । बहुत बार तो हम उनके जैसा व्यवहार भी करने लगते हैं ।

पाठशाला के पालक-शिक्षक सभा में पालक आए हैं । वे आपस में क्या बातचीत कर रहे हैं, सुनो ।

बताओ तो

- तुम्हें अपने सहपाठी मित्र या सहेली की कौन-सी बात पसंद है ? कौन-सी बात पसंद नहीं है ?
- तुम्हें अपने मित्र या सहेली को कौन-सी बातें सिखाने की इच्छा होती है ?

मित्र या सहेली की तरह ही अपने चारों ओरवाले परिसर के व्यक्तियों का भी अपने ऊपर प्रभाव पड़ता रहता है । अपने पड़ोसियों से हमारा प्रतिदिन कोई न कोई काम पड़ता ही है । आपसी व्यवहार, बातचीत और भोजन ग्रहण करने की विधि को हम निकटता से देखते रहते हैं । इन सब बातों का हमारे आचार-विचार पर प्रभाव पड़ता ही रहता है । किसी अन्य स्थान से आनेवाले लोग यदि पड़ोस में रहते हों तो उनके खाद्‌यपदार्थ, उनके अलग ढंग के पर्व तथा समारोह के संबंध में सहज रूप में ही जानकारी मिलती है । इससे हमारा विविधता से परिचय होता है ।

बहुत बार ऐसा भी होता है कि हमारे पड़ोसी ने हमें बचपन से ही देखा हुआ होता है । अपने प्रति उनमें लगाव होता है । पड़ोसी की अच्छी आदतों को भी हमें स्वीकारने का अवसर मिलता है। अच्छा पड़ोसी हमारे व्यक्तित्व निर्माण के लिए एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति होता है ।

- प्रताप, सुप्रिया और हीना की तरह क्या तुमने भी अपने पड़ोसी से कोई बात सीखी है ? उसके संबंध में अपनी कॉपी में लिखो ।

हमने क्या सीखा

- छोटे से बड़ा होते समय हम जो विभिन्न बातें सीखते हैं; उनसे ही हमारा व्यक्तित्व निर्मित होता है ।
- हमारे व्यक्तित्व निर्माण में अपने माता-पिता, सगे-संबंधियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।
- अपने मित्रों-सहेलियों और पास-पड़ोस में रहनेवालों से भी हम कुछ-न-कुछ अवश्य सीखते रहते हैं ।
- हम पर सप्रयोजन किए जाने वाले संस्कारों द्‌वारा भी हम सीखते हैं ।
- अपने आस-पास देखकर भी हम बहुत-कुछ सीखते हैं ।

स्वाध्याय

(अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

(१) हमारे अंदर .... आदतों का निर्माण हो; इसलिए हमारे अपने लोग प्रयास करते रहते हैं ।
(२) अच्छा पड़ोसी हमारे .... महत्त्वपूर्ण होता है ।

(आ) एक वाक्य में उत्तर लिखो :

(१) हमारी रुचि-अरुचि (पसंद-नापसंद) कैसे निर्धारित होती जाती है ?
(२) हमारा विविधता से परिचय कैसे होता है ?

(इ) पहचानो, कौन हूँ मैं :

(१) दादा जी के साथ कभी-कभी टीले पर घूमने जाने वाला .... ।
(२) सुप्रिया को पढ़ने की आदत डालने वाली .... ।
(३) पड़ोसी दादी द्‌वारा स्वावलंबन का महत्त्व समझने वाली .... ।

उपक्रम

- ऐसे लड़कों-लड़कियों की जानकारी तथा चित्र एकत्र करो, जिन्हें वीरता पुरस्कार मिले हैं ।
- छुट्टी के समय तुम्हारे मित्रों ने कौन-सी नई बातें सीखीं, उनका अंकन करो ।

* * *

I2TDZH